शबद हज़ारे

शबद हज़ारे

माझ महला ५ चउपदे घरु १ ।।

मेरा मन लोचै गुर दरसन ताई।। बिलप करे चात्रिक की निआई।। त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ।।१।। हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ।।१।। रहाउ।। तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी।। चिरु होआ देखे सारिंगपाणी।। धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ।।२।। हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ।।१।। रहाउ।। इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता।। हुणि कदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता।। मोहि रैणि न विआवै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ।।३।। हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ।।१।। रहाउ।। भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ।। प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ।। सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ।।४।। हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ।।रहाउ।।१।।८।।

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे

ੴ१ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु

अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार।। दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु।।१।। साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु।।१।। रहाउ।। अनदिनु साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ।। सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ।।२।। दइआल तेरै नामि तरा सद कुरबाणै जाउ।।१।। रहाउ।। सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ।। ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि करे।।३।। तुधु बाझु पिआरे केव रहा।। सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहां।। दूजा नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा।।१।।रहाउ।। सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचंउ कोइ।। नानकु ता का दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइ।।४।। साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ।।१।।ऱहाउ।।४।।१।।

तिलंग महला १ घरु ३ ੴ१ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाए।। मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए।।१।। हंउ कुरबानै जाउ मिहरवाना हंउ कुरबानै जाउ।। हंउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ।। लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ सद कुरबानै जाउ ।।१।ऱहाउ।। काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ।। रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ।।२।। जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि।। धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि।।३।। आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ।। नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइ।।४।।१।।३।।

तिलंग मः १

इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि।। आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि।। सहु नेड़ै धन कंमलीए बाहरु किआ ढूढेहि।। भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो।। ता सोहागणि जाणीऐ

लागी जा सहु धरे पिआरो।।१।। इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै।। करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै।। विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरे धावै।। लब लोभ अहंकार की माती माइआ माहि समाणी।। इनी बाती सहु पाईऐ नाही भई कामणि इआणी।।२।। जाइ पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईऐ।। जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ।। जा कै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ।। सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ।। एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती सहु पाईऐ।।३।। आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई।। सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई।। आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई।। ऐसै रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी।। सुंदरि साइ सरूप बिचखणि कहीऐ सा सिआणी।।४।।२।।४।।

सूही महला १।।

कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा।। कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा।।१।। मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा।। तूं जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा।।१।रहाउ।। मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा।। घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिध चितु रहावा।।२।। आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा।। आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा।।३।। अंधुला नीच जात परदेसी खिनु आवै तिलु जावै।। ता की संगति नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै।।४।।२।।९।।

ੴ१ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।
रागु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १।।

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई।। जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई।।१।। तेरे गुण गावा देहि बुझाई।। जैसे सच महि रहउ रजाई।।१।। रहाउ।। जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई।। तेरा अंतु न जाणा मेरे साहिब मै अंधुले किआ चतुराई।।२।। किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाई।। जो तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई।।३।। एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई।। भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै नाउ न जाई।।४।। १।।

बिलावलु महला १।।

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा।। एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा।।१।। मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई।। कउणु जाणै पीर पराई।। हम नाही चिंत पराई।।१।।रहाउ।। अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी।। जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी।।२।। सिख मति सभ बुधि तुम्हारी मंदिर छावा तेरे।। तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे।।३।। जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे।। जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे।।४।।२।।

((((((((((((----------))))))))))))